जेण्डर और शिक्षा के सिद्धान्तों की विशेषताएं :

समाज में शिक्षा के द्वारा लैंगिक विभेदता को समाप्त करना।

शिक्षा के सिद्धान्तों के द्वारा लैंगिक अवधारणा का विकास कर लोगों के व्यक्तिगत सोच में परिवर्तन लाना।

जेण्डर एवं शिक्षा का सिद्धान्त व्यक्ति के सामाजिक उत्थान में सहायक होते है।

इसके द्वारा शैक्षिक प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाया जाता है।

इसके द्वारा लैंगिक विभाजन के अनुसार कार्यों का बंटवारा किया जाता है।

जेण्डर एवं शिक्षा के सिद्धान्तों की आवश्यकता या महत्व :

सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए।

शिक्षण अधिगम कार्यों को सर्वांगिण रूप प्रदान करने के लिए।

सामाजिक जीवन को व्यवहारिक रूप प्रदान करने के लिए।

कार्यों के लैंगिक विभाजन के लिए।

शिक्षा और समाज के सहय संबंध स्थापित करने के लिए।

जेण्डर और शिक्षा के सिद्धान्त का अवधारणा :

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो पुरानी रूढ़िवादी विचारों और को परिवर्तित कर समाज में एक नई व्यवस्था लाने का कार्य इसके द्वारा बालक-बालिकाओं को समान रूप से उनके रुचियों सार विकसित कर तथा समाज में लिंगीय विभेद मिटाकर के प्रति सोच को बदला जा सकता है जिसके लिए हमारे संवि और मनोवैज्ञानिकों ने जेण्डर संबंधी शोध कार्य करके कुछ की दिया है जो महिलाओं के प्रति पुरानी अवधारणाओं को कर समाज को परिवर्तन की ओर ले जाता है और समाज में व्यवस्था को लागू करता है।

अतः हम कह सकते है कि हमारे समाज में अवधारणाओं में लैंगिक विभेद को जन्म दिया है जिससे हमारे शास्त्रीयों ने इन्ही सिद्धान्तों के माध्यम से लोगों तक पहुचाने का किया है जिसे हम अपने सामाजिक तथा व्यवहारिक जीवन में प्र में लाते है। इस प्रकार इन सिद्धान्तों के द्वारा लिंगीय विभेद मिटा कर समाज में जागरूकता लाकर एक परिवर्तित समाज, समाज, और सभ्य समाज का निर्माण करते है।

College Name:- SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDU.

Paper:- C-6 (Gender, School & Society)

UNIT- 2

Sub:- जेण्डर तथा शिक्षा का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

Date:- 13.03.2023

Gender, School and Society (21-23)

लिंग, विद्यालय और समाज

Paper-C-6, Unit-2

⇒ जेण्डर तथा शिक्षा का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य :

Intro:- भारत विभिन्नताओं वाला देश है। यहाँ भिन्न-भिन्न जाति, वर्ग, धर्म तथा संस्कृतियों के लोग रहते हैं जो अपनी पुरानी धारणाओं और रूढ़िवादि विचारधाराओं के साथ समाज में आज भी विद्यमान है। जिसमें लिंगीय अवधारणा का मुद्दा समाज में इन विचारों को मानने वाले लोगों से जुड़ा है। बदलते परिवेश के साथ इन लिंगीय विभेदों को मिटाकर समाज में शिक्षा के द्वारा जागरूकता फैलाकर इन्हें दूर करना अतिआवश्यक है। इन्हीं लिंगीय अवधारणाओं ने कुछ सिद्धान्तों को जन्म दिया है जो हमारे समाज को प्रभावित करता है।

अतः शिक्षा को माध्यम बनाकर इन धारणाओं और रूढ़िवद्धता को हटाकर सामाजिक जागरूकता लाने की आवश्यकता है। तभी समाज परिवर्तन की राह पर चलकर विकसित राष्ट्र हो सकेगा।